The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-3, October-2024
www.theresearchdialogue.com

"उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

डॉ0 राजकुमार यादव
एसोसिएट प्रोफसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर
महाविद्यालय जौनपुर उत्तर प्रदेश

संदीप कुमार
शोधार्थी
(बी0एड0, एम0एड0, नेट)
शिक्षक–शिक्षा विभाग
राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, जौनपुर उत्तर प्रदेश

सारांश

मुस्लिम परिवारों में धार्मिक और नैतिक शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाता है। बच्चों के लिए इस वातावरण में धार्मिक अध्ययन और नैतिक मूल्यों का पालन महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसे परिवारों में धार्मिक शिक्षा, धार्मिक मान्यताओं, और सामुदायिक गतिविधियों की प्राथमिकता के कारण बच्चे धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में अधिक रुचि लेते हैं। दूसरी ओर, गैर–मुस्लिम परिवारों में आधुनिकता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, और व्यापक शैक्षिक अन्वेषण को बढ़ावा दिया जाता है। इस वातावरण में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, और अन्य विविध क्षेत्रों में रुचि बढ़ने की संभावना होती है, क्योंकि यह परिवार बच्चों को आत्म–अभिव्यक्ति और नई चीजों को आजमाने के लिए प्रेरित करता है। पारिवारिक आर्थिक स्थिति भी छात्रों की रुचियों पर सीधा प्रभाव डालती है। आर्थिक रूप से संपन्न परिवार बच्चों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा, निजी कोचिंग, और शैक्षिक संसाधनों का लाभ देने में सक्षम होते हैं, जिससे बच्चे गहन अध्ययन और शोध के लिए प्रोत्साहित होते हैं। इसके विपरीत, आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवार संसाधनों की सीमाओं के कारण बच्चों को पर्याप्त शैक्षिक अवसर प्रदान नहीं कर पाते, जिससे बच्चों की रुचियों पर सीमितता का प्रभाव पड़ सकता है। माता–पिता का शैक्षणिक स्तर भी बच्चों की रुचियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उच्च शिक्षित माता–पिता बच्चों को पढ़ाई में सक्रिय मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, उन्हें विभिन्न अवसरों के प्रति जागरूक करते हैं और विषय चयन में सहयोग करते हैं। वहीं, कम शिक्षित माता–पिता संसाधनों और शैक्षणिक अनुभव की कमी के कारण बच्चों का पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं कर पाते, जिससे उनकी रुचियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। सांस्कृतिक और धार्मिक शिक्षा के प्रति झुकाव से बच्चों की शैक्षिक प्राथमिकताओं पर प्रभाव पड़ता है। मुस्लिम छात्रों के परिवारों में धार्मिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे छात्रों की धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में अधिक रुचि विकसित होती है। वहीं, गैर–मुस्लिम परिवारों में धर्म और संस्कृति का प्रभाव कम होते हुए, आधुनिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे विज्ञान, गणित, कंप्यूटर, और कला जैसी विविध क्षेत्रों में उनकी रुचि बढ़ती है। शोध अध्ययन के निष्कर्ष – उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द :– उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम विद्यार्थी, आकांक्षा स्तर

• प्रस्तावना

पारिवारिक वातावरण में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कारकों की भूमिका होती है, जो किसी भी छात्र की शैक्षणिक रुचियों और प्रेरणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है। मुस्लिम और गैर–मुस्लिम छात्रों के बीच इन प्रभावों में अंतर सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक मूल्यों, और परंपराओं के आधार पर देखा जा सकता है। मुस्लिम परिवारों में धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएं, जैसे कि धार्मिक अध्ययन, नैतिक मूल्यों का महत्व, और समुदाय का योगदान, बच्चों की रुचियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार का वातावरण बच्चों को धार्मिक शिक्षा और समाज–सेवा जैसी गतिविधियों की ओर अधिक प्रेरित कर सकता है, जो उनके भविष्य के शैक्षिक एवं व्यावसायिक चयन में भी दिखाई दे सकते हैं। इसके विपरीत, गैर–मुस्लिम परिवारों में आधुनिकता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, और विभिन्न क्षेत्रों में अन्वेषण की प्रवृत्ति अधिक हो सकती है, जिससे बच्चे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और कला जैसे क्षेत्रों में अधिक रुचि ले सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से समृद्ध परिवार बच्चों को निजी कोचिंग, उच्च स्तरीय पुस्तकें, और शैक्षिक अवसर प्रदान कर सकते हैं, जिससे वे अपने रुचि के विषयों में गहराई से अध्ययन कर सकें। वहीं, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में संसाधनों की कमी के कारण बच्चों की रुचियों में सीमितता देखी जा सकती है। ऐसे परिवारों के बच्चे प्रायः कम संसाधनों के साथ शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, जिससे उनके रुचि के क्षेत्रों का विस्तार सीमित हो सकता है। पारिवारिक शिक्षा का स्तर भी छात्रों की रुचि पर प्रभाव डालता है। माता–पिता का शैक्षणिक दृष्टिकोण और उनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर सीधा प्रभाव डालती है। उच्च शिक्षित माता–पिता प्रायः बच्चों को पढ़ाई में सक्रिय रूप से सहयोग प्रदान करते हैं, उन्हें सही मार्गदर्शन देते हैं, और बेहतर अवसरों के प्रति जागरूक करते हैं। इसके विपरीत, कम शिक्षित माता–पिता संसाधनों की सीमाओं और मार्गदर्शन की कमी के कारण बच्चों को पर्याप्त समर्थन नहीं दे पाते। सांस्कृतिक और धार्मिक शिक्षा के प्रति झुकाव से बच्चों की शैक्षिक प्राथमिकताओं पर प्रभाव पड़ता है। मुस्लिम छात्रों के परिवारों में धार्मिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे छात्रों की धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में अधिक रुचि विकसित होती है। इसी तरह, गैर–मुस्लिम परिवारों में धर्म और संस्कृति का प्रभाव कुछ हद तक होता है, लेकिन अक्सर बच्चों की व्यक्तिगत इच्छाओं और आधुनिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है। इससे विज्ञान, गणित, कंप्यूटर और कला जैसी विविध क्षेत्रों में उनकी रुचि बढ़

सकती है। इस प्रकार, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में मुस्लिम और गैर–मुस्लिम छात्रों के पारिवारिक वातावरण का उनकी रुचि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जो विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक कारकों से संचालित होता है। पारिवारिक वातावरण बच्चों की सोच, आदतों, और शैक्षिक मार्ग पर गहरा प्रभाव डालता है।

• अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत मुस्लिम और गैर–मुस्लिम विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षणिक रुचियों पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन की आवश्यकता और महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यह अध्ययन समाज, शिक्षा, और सांस्कृतिक विकास की गहरी समझ प्रदान करता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में, जहाँ विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग साथ रहते हैं, बच्चों की शैक्षिक रुचियों और उनके विकास को समझना आवश्यक हो जाता है। यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारिवारिक वातावरण का किसी भी छात्र की सोच, आकांक्षाओं, और शैक्षणिक अभिरुचियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जो उनके भविष्य की दिशा को तय करने में सहायक होता है। मुस्लिम और गैर–मुस्लिम छात्रों के पारिवारिक वातावरण में अंतर देखा जा सकता है, जो उनके परिवार की धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक परंपराओं, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, और सामाजिक–आर्थिक स्थिति से प्रभावित होता है। मुस्लिम परिवारों में धार्मिकता का अधिक प्रभाव देखा जाता है, जहाँ परिवार बच्चों को नैतिक और धार्मिक मूल्यों पर जोर देने वाले वातावरण में रखते हैं। इससे बच्चों में धार्मिक शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों में रुचि विकसित होती है। इसके विपरीत, गैर–मुस्लिम परिवारों में आधुनिकता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दृष्टिकोण अधिक होता है, जिससे बच्चे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और विविध शैक्षणिक क्षेत्रों में अधिक रुचि लेते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि कैसे इन धार्मिक और सांस्कृतिक कारकों के अंतर से बच्चों की शैक्षणिक प्राथमिकताओं में भिन्नता उत्पन्न होती है, और यह भी कि कैसे परिवार का धार्मिक दृष्टिकोण उनके द्वारा चुने गए अध्ययन के क्षेत्र को प्रभावित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, पारिवारिक आर्थिक स्थिति भी इस अध्ययन का महत्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि आर्थिक स्थिति का शैक्षिक अवसरों और संसाधनों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न परिवारों में बच्चों को उच्च स्तरीय शैक्षिक संसाधन, जैसे निजी कोचिंग, उच्च गुणवत्ता की पुस्तकें, और बेहतर तकनीकी संसाधन उपलब्ध होते हैं, जिससे उनकी शैक्षणिक अभिरुचि अधिक परिष्कृत होती है। वहीं, आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवारों में संसाधनों की कमी के कारण बच्चे शिक्षा

के सीमित साधनों पर निर्भर होते हैं, जो उनकी शैक्षणिक अभिरुचियों पर सीधा प्रभाव डालता है। इसके साथ ही, माता–पिता का शैक्षणिक स्तर और उनका शैक्षिक दृष्टिकोण भी बच्चों की रुचियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। उच्च शिक्षित माता–पिता बच्चों को शिक्षा में अधिक सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं, जबकि कम शिक्षित माता–पिता अपने सीमित ज्ञान और संसाधनों के कारण बच्चों का सही मार्गदर्शन करने में कठिनाई का अनुभव कर सकते हैं। यह अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल शिक्षा में पारिवारिक वातावरण के महत्व को दर्शाता है, बल्कि समाज में व्याप्त आर्थिक और सामाजिक असमानताओं के कारण उत्पन्न शैक्षिक असमानताओं को भी उजागर करता है। सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश में व्याप्त विभिन्नता के कारण बच्चों में शैक्षिक रुचियों का विकास भिन्न–भिन्न रूप में होता है। उदाहरणस्वरूप, मुस्लिम परिवारों में धार्मिक शिक्षा को विशेष महत्व दिए जाने के कारण छात्र धार्मिक अध्ययन में रुचि लेते हैं, वहीं गैर–मुस्लिम परिवारों में आधुनिक शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता है, जिससे बच्चे विज्ञान, गणित, और प्रौद्योगिकी में अधिक रुचि विकसित करते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से न केवल इन बच्चों की रुचियों के निर्माण में पारिवारिक कारकों की भूमिका समझ में आती है, बल्कि यह भी स्पष्ट होता है कि समाज में शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में किस प्रकार के अंतर होते हैं। यह अध्ययन छात्रों के विकास में सहायता करता है, जिससे शिक्षक और अभिभावक बच्चों के मानसिक और शैक्षिक विकास के लिए उचित वातावरण प्रदान करने में सक्षम हो सकते हैं।

• सम्बन्धित साहित्य का महत्व

सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में अनेक अध्ययन हुए हैं जिसमें से कुछ इस प्रकार है– **जी0 देवराज (2015), भोलानाथ, संजना (2007), बी. हसन (2006)** आदि के द्वारा अध्ययन किये गये हैं।

• समस्या कथन

"उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

• चरों का परिभाषिकरण

➢ **उच्चतर माध्यमिक विद्यालय** – उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को हिंदी में हायर सेकेंडरी स्कूल कहा जाता है। यह विद्यालय उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए होता

है और आमतौर पर विद्यार्थियों की आयु 14 से 18 वर्ष के बीच होती है, जो कि 9वीं और 10वीं कक्षा के पास करने के बाद उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के लिए आते हैं। इन विद्यालयों में विभिन्न विषयों में अध्ययन करने का मौका मिलता है, जो छात्रों की अध्ययन और करियर के विभिन्न पहलुओं को बढ़ावा देता है।

- **मुस्लिम विद्यार्थी** – मुस्लिम विद्यार्थियों से तात्पर्य इस्लाम धर्म को मानने वाले विद्यार्थियों से है।
- **गैर मुस्लिम विद्यार्थी** – गैर मुस्लिम विद्यार्थियों से तात्पर्य इस्लाम धर्म को न मानने वाले विद्यार्थियों से है। जिसमें सिख विद्यार्थी, जैन विद्यार्थी, बौद्ध विद्यार्थी, सनातन धर्म के विद्यार्थियों से है।
- **पारिवारिक वातावरण** – पारिवारिक वातावरण का तात्पर्य घर और परिवार में मौजूद उस माहौल से है, जिसमें बच्चे बड़े होते हैं और जिसका प्रभाव उनके व्यक्तित्व, आदतों, दृष्टिकोण, और रुचियों पर पड़ता है। यह वातावरण कई कारकों से मिलकर बनता है, जैसे कि परिवार के सदस्यों का आपसी संबंध, भावनात्मक सहयोग, संचार का तरीका, पारिवारिक मूल्य, आर्थिक स्थिति, धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ, तथा शैक्षिक दृष्टिकोण। पारिवारिक वातावरण में माता–पिता का बच्चों के प्रति दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए, माता–पिता का बच्चों के प्रति सहायक और प्रेरणादायक व्यवहार बच्चों को आत्मविश्वास और स्वतंत्रता प्रदान करता है, जिससे वे अपनी रुचियों को स्वतंत्र रूप से खोज सकते हैं। इसके विपरीत, अनुशासन और नियंत्रण का अत्यधिक दबाव बच्चों को दबाव महसूस करवा सकता है, जिससे उनकी आत्म–प्रेरणा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का भी पारिवारिक वातावरण में एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। जिन परिवारों में धार्मिक गतिविधियाँ और सांस्कृतिक परंपराएँ नियमित रूप से निभाई जाती हैं, वहाँ के बच्चों में उन गतिविधियों के प्रति स्वाभाविक रुचि और आस्था विकसित होती है। इसके विपरीत, जिन परिवारों में आधुनिक दृष्टिकोण और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया जाता है, वहाँ के बच्चे विज्ञान, कला, और समाज के अन्य पहलुओं में अधिक रुचि ले सकते हैं। पारिवारिक आर्थिक स्थिति भी इस वातावरण का एक महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि यह बच्चों को शिक्षा, खेल, और अन्य क्षेत्रों में मिलने वाले अवसरों को निर्धारित करता है। आर्थिक रूप से संपन्न परिवार अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा, तकनीकी उपकरण, और अन्य संसाधनों की सुविधा दे सकते हैं, जबकि आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में संसाधनों की सीमाएँ होती हैं, जिससे

बच्चों की रुचियों का विकास सीमित हो सकता है। अतः पारिवारिक वातावरण बच्चों की शारीरिक, मानसिक, और शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह बच्चों की रुचियों और आदतों को आकार देने के साथ–साथ उनके भावनात्मक और सामाजिक कौशल को भी प्रभावित करता है।

- **रुचि –** रुचि एक मानसिक स्थिति या प्रवृत्ति है, जिसमें किसी व्यक्ति को किसी विशेष कार्य, विषय, या गतिविधि के प्रति आकर्षण और इच्छा होती है। यह एक व्यक्तिगत अनुभव है जो व्यक्ति की भावनाओं, विचारों और प्राथमिकताओं से जुड़ा होता है। जब किसी व्यक्ति को किसी विषय, कार्य या क्षेत्र में गहरी दिलचस्पी होती है, तो उसे उस क्षेत्र के बारे में अधिक जानने, सीखने, और उसमें भाग लेने की इच्छा होती है। रुचि आमतौर पर किसी व्यक्ति की पसंद, अभिरुचि, और संवेदनाओं से प्रभावित होती है और यह समय, अनुभव और शिक्षा के साथ बदल सकती है। रुचि किसी विशेष गतिविधि, अध्ययन, या शौक के प्रति आकर्षण पैदा करती है, जिससे व्यक्ति उस गतिविधि में अपनी ऊर्जा और समय लगाता है। उदाहरण के तौर पर, एक छात्र जो विज्ञान में रुचि रखता है, वह विज्ञान के विषयों में गहरी दिलचस्पी दिखाएगा और इस क्षेत्र में अधिक ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करेगा। इसी तरह, एक संगीत प्रेमी व्यक्ति को संगीत सुनने, बजाने या उस पर चर्चा करने में रुचि हो सकती है। रुचि को समझने के लिए यह जरूरी है कि इसे किसी व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक अवस्थाओं से जोड़ा जाए। जब व्यक्ति किसी कार्य या गतिविधि में रुचि महसूस करता है, तो वह स्वाभाविक रूप से उस कार्य में अधिक समय और ऊर्जा लगाएगा, जिससे उसके प्रदर्शन और कौशल में सुधार हो सकता है। यह रुचि व्यक्तिगत विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि जब किसी व्यक्ति को किसी विषय में गहरी रुचि होती है, तो वह उस क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने की कोशिश करता है। रुचि का विकास विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है, जैसे परिवार का वातावरण, शिक्षा, सामाजिक संपर्क, और व्यक्तिगत अनुभव। इन कारकों का प्रभाव किसी व्यक्ति की रुचियों के निर्माण और उनकी दिशा पर पड़ता है। परिवार और समाज से मिलने वाले प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से भी किसी व्यक्ति की रुचियों का विस्तार हो सकता है इसलिए, रुचि केवल एक साधारण पसंद नहीं है, बल्कि यह एक मानसिक और भावनात्मक अवस्था है जो व्यक्ति की सोच, कार्य, और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है।

- **अध्ययन के उद्देश्य**
  - ➢ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
  - ➢ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम कला वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
  - ➢ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- **अध्ययन की परिकल्पनाऐं**
  - ➢ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
  - ➢ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम कला वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
  - ➢ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- **आंकड़ा संग्रहण के उपकरण**

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए उच्च माध्यमिक स्तर विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

- **न्यादर्श**

वर्तमान शोधपत्र हेतु 240 मुस्लिम विद्यार्थी एवं 360 गैर मुस्लिम विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

- **उपकरण**
  - ➢ पारिवारिक वातावरण मापनी – डॉ॰ करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित प्रश्नावली।
  - ➢ रुचि मापनी – डॉ0 एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित प्रश्नावली।
- **परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या**

परिकल्पना क्रमांक 1 :– उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

तालिका संख्या – 1

मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का रुचि पर प्रभाव की स्थिति

Group	N	Correlation	Signification
मुस्लिम विद्यार्थी	240	0.043	धनात्मक सहसम्बन्ध
गैर मुस्लिम विद्यार्थी	360	0.0034	धनात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में मुस्लिम विद्यार्थियों के परिवार के वातावरण व रुचि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.043 पाया गया है। पाया गया मान धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। गैर मुस्लिम विद्यार्थियों के परिवार के वातावरण व रुचि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0034 पाया गया है। पाया गया मान धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

परिकल्पना क्रमांक 2 :– उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम कला वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

तालिका संख्या – 4.2

मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम कला वर्ग के विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण का रुचि पर प्रभाव की स्थिति

Group	N	Correlation	Signification
मुस्लिम छात्र	120	0.0956	धनात्मक सहसम्बन्ध
गैर मुस्लिम छात्र	180	-0.0132	ऋणात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या :– तालिका संख्या 4.2 में मुस्लिम कला वर्ग के विद्यार्थियों का परिवार के वातावरण व रुचि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0956 पाया गया है। पाया गया मान धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। गैर मुस्लिम कला वर्ग के विद्यार्थियों का परिवार के वातावरण व रुचि के

मध्य सहसम्बन्ध का मान –0.0132 पाया गया है। पाया गया मान ऋणात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

परिकल्पना क्रमांक 3 :– उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

तालिका संख्या – 3

मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण का रुचि पर प्रभाव की स्थिति

Group	N	Correlation	Signification
मुस्लिम छात्राऐं	120	-0.0378	ऋणात्मक सहसम्बन्ध
गैर मुस्लिम छात्राऐं	180	0.0012	धनात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या :– तालिका संख्या 3 में मुस्लिम विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का परिवार के वातावरण व रुचि के मध्य सहसम्बन्ध का मान –0.0378 पाया गया है। पाया गया मान ऋणात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। गैर मुस्लिम विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का परिवार के वातावरण व रुचि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0012 पाया गया है। पाया गया मान धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

- **शोध अध्ययन के निष्कर्ष**
  - उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
  - उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् गैर मुस्लिम वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
  - उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम कला वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
  - उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् गैर मुस्लिम कला वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

- उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् गैर मुस्लिम विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

• सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एडलर ए० – द ऐजुकेशन ऑफ चिल्ड्रन, लाल बुक डिपो मेरठ।

गुप्ता एस०पी० – ''शिक्षा मनोविज्ञान'' शाखा प्रकाशन मेरठ।

युग किबंल – शिक्षा मनोविज्ञान की आधार शिला, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

शर्मा आर० – चाइल्ड साइकोलॉजी, एटलांटिक प्रकाशन एवं वितरक, दिल्ली।

मंगल एस०के० – शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

प्रसाद प्रो० चौबे – शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक, आगरा।

कुमार डा० नरेश – राष्ट्रीय शिक्षा– विक्रम प्रकाशन, नई दिल्ली।

अरोड़ा रीता – शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, लाल बुक डिपो, मेरठ।

कपिल एच.के. – अनुसंधान विधियाँ –भार्गव प्रिन्टर्स, आगरा।

गुप्त रामबाबू – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, रतन प्रकाशन मंदिर, आगरा 1996।

रमन बिहारी लाल – शिक्षा दर्शन रस्तोगी पब्लिकेशन, तृतीय संशोधित, संस्करण 1975।

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal

ISSN: 2583-438X

Volume-3, Issue-3, October-2024

www.theresearchdialogue.com

Certificate Number Oct.-2024/21

Impact Factor (RPRI-4.73)

https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 राजकुमार यादव और संदीप कुमार

for publication of research paper title

"उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-03, Issue-03, Month October, Year-2024.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY